मॉड्यूल 8: वैश्विक महामारी के दौरान बाल संरक्षण

सत्र 1: वैश्विक महामारी और बाल संरक्षण के मुद्दे

अवधि: 8:48 मिनट

परिचय

जैसा कि हमने वीडियो में देखा कोविड–19 जैसी संक्रामक बीमारियां वातावरण को बिगाड़ देती हैं जिनमें बच्चे बढ़ते और विकसित होते हैं। परिवार, दोस्त, दैनिक दिनचर्या और व्यापक समुदाय में विघटन का असर बच्चों की खुशहाली, विकास और सुरक्षा पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इसके अतिरिक्त कोविड–19 की रोकथाम के लिए किए गए उपाय तथा उठाए गए कदम, बच्चों को सुरक्षात्मक जोखिम में डाल सकते हैं। गृह आधारित, संस्था आधारित क्वारनटाईन और अलगाव (आईसोलेशन) के उपाय, बच्चों तथा उनके परिवारों पर नकारात्मक असर डाल सकते हैं।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय लॉकडाउन के समय सभी आर्थिक गतिविधियां रोक दी गयी थीं जिससे सभी प्रभावित हुए खास तौर से समाज के कमजोर तथा आर्थिक रूप से दयनीय लोग, जिनकी आर्थिक समस्या और बढ़ गयी। इससे पूरे परिवार पर दबाव पड़ता है और बच्चों की उपेक्षा, दुर्व्यवहार तथा हिंसा के शिकार होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए कोविड–19 के दौरान बाल संरक्षण पर कार्य करने वाले लोगों को बेहतर तरीके से इन जोखिमों का प्रतिउत्तर देने के लिए तैयार रहना होगा।

आगे आने वाले सत्रों में हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि कोविड–19 के दौरान बच्चों के सुरक्षा जोखिमों का प्रतिउत्तर बाल संरक्षण पर कार्य करने वाले लोग कैसे दे सकते हैं।

सत्र 1: वैश्विक महामारी और बाल संरक्षण के मुद्दे

वैश्विक महामारी क्या है?

किसी वैश्विक महामारी को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है "एक ऐसी महामारी जो विश्व स्तर पर या बहुत बड़े भौगोलिक क्षेत्र में हो रही है, जो अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं को लांघ चुकी है और सामान्यतः एक बहुत बड़ी जनसंख्या को प्रभावित कर रही है।"[1]

हम जानते हैं कि शताब्दियों से विश्व ने अनेक वैश्विक महामारियों का सामना किया है जिससे अनेकों देश प्रभावित हुए हैं जिसमें भारत भी शामिल था।

[1] https://www.who.int/bulletin/volumes/89/7/11-088815/en/#:~:text=A%20pandemic%20is%20defined%20as,are%20not%20considered%20pandemics

विभिन्न प्रकार के प्लेग, फ्लू, कॉलरा, एच आई वी/एड्स, सार्स आदि कुछ वैश्विक महामारियों के उदाहरण हैं। इस सूची में कोविड–19 सबसे नया है।

कोविड–19 क्या है

कोरोना वायरस बीमारी 2019 (कोविड–19) – 'CO'– कोरोना के लिए, 'VI'– वायरस के लिए और 'D'– बीमारी के लिए है– यह एक बीमारी है जो एक नए कोराना वायरस के स्ट्रेन के कारण होती है। इसकी पहचान सबसे पहले 'वुहान', चीन में हुई।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने आधिकारिक तौर पर 11 मार्च 2020 को कोविड–19 को एक वैश्विक बीमारी घोषित किया।

यद्यपि, कोविड–19 को वैश्विक बीमारी के रूप में घोषित करना, यह संकेत नहीं है कि यह प्राणघातक है बल्कि यह बीमारी के विस्तृत भौगोलिक फैलाव की एक स्वीकारोक्ति है।[2]

कोविड–19 के लक्षण क्या हैं

कोविड–19 के सबसे सामान्य लक्षण हैं, बुखार, थकान, सूखी खांसी। कुछ मरीजों में दर्द, नाक का बन्द होना, बहती नाक, गले में खराश या दस्त हो सकता है। यह लक्षण हल्के होते हैं और धीरे–धीरे शुरू होते हैं।
कुछ लोग संक्रमित होते हैं किन्तु उनमें कोई लक्षण नहीं उत्पन्न होता है और वे अस्वस्थ महसूस नहीं करते हैं।

लगभग 80 प्रतिशत लोग बिना किसी विशेष उपचार के स्वस्थ हो जाते हैं[3]। यद्यपि लगभग 15 प्रतिशत लोगों में कोविड–19 गंभीर रूप ले लेती है, जिनमें तेज सांस चलना, भूख की कमी, शंका, लगातार दर्द या छाती में दबाव और उच्च तापमान जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं।

नियंत्रण तथा रोकथाम के उपाय क्या हैं

जब से कोविड–19 ने हमारे देश को प्रभावित किया है तभी से हम रोकथाम के कदम उठा रहे हैं।

यद्यपि जो रोकथाम के कदम हम उठा रहे हैं उनके बारे में चर्चा करना अच्छा होगा।

- एक मीटर की शारीरिक दूरी का पालन हर समय करना
- अनिवार्य रूप से चेहरा ढ़कना या मास्क का इस्तेमाल करना
- अक्सर हाथ धोने की आदत डालना। (कम से कम 40 से 60 सेकेण्ड तक) तब भी जब हाथ गन्दे न दिखाई दे रहे हों और अल्कोहल आधारित सेनेटाईज़र का इस्तेमाल (कम से कम 20 सेकेण्ड तक)।
- खांसने या छींकने के समय रूमाल/टीशू या मुड़े हुए हाथों से मुंह और नाक ढ़कने का सख्त अभ्यास और प्रयोग किए गए टीशू का सही निस्तारण।

[2] https://www.unicef.org/stories/novel-coronavirus-outbreak-what-parents-should-know
[3] https://www.mohfw.gov.in/pdf/FAQ.pdf

- सभी के द्वारा स्वास्थ्य के बारे में स्व–अनुश्रवण और किसी भी लक्षण के दिखने पर जल्द से जल्द रिपोर्ट करना।[4]

आईए अब कोविड–19 की रोकथाम पर एक वीडियो देखें

हम पहले से ही जानते हैं कि भारत बुरी तरह से प्रभावित देशों में से एक है जहां लाखों लोग संक्रमित हुए हैं। आईए देखें कि कोविड–19 की संक्रमण की स्थिति भारत में क्या है।

9 मई 2021 तक भारत में पुष्टिकृत मामले लगभग 2,26,62,548 थे जिसमें से 1,86,65,462 ठीक हो चुके थे और 3,741,308 सक्रिय थे। **9 मई 2021** तक 2,46,148 मौतें हो चुकी थी[5] और कुल 30,37,50,077 जांचें हो चुकी थीं[6]।

आईए अब जानें कि कोविड–19 का सामाजिक पारिस्थितिको प्रभाव क्या है:

कोविड–19 के कारण राष्ट्रीय स्तर पर लॉकडाउन हुआ, यातायात पर नियंत्रण लगाया गया और बहुत बड़े पैमाने पर शहरों से गांवों की ओर पलायन हुआ। इन कारकों के फलस्वरूप निम्न बातें हुई हैं–

- सामाजिक पूंजी का क्षरण; मूलभूत सेवाओं तक पहुंच में बाधा या कमी
- भरोसे का टूटना; कम संसाधनों के कारण आपसी खींचातान, सामुदायिक सहायक सेवाओं, शिक्षा तथा खेलने के स्थानों तक सीमित पहुंच
- परिवारों का विघटन, सामाजिक सहायता तक कम पहुंच, देखभालकर्ताओं का संकट, हिंसा/घरेलू दुर्व्यवहार का अत्यधिक जोखिम
- बच्चों के साथ दुर्व्यवहार, उपेक्षा, हिंसा, शोषण, मनोवैज्ञानिक संकट और विकास पर नकारात्मक प्रभाव।
- कुछ विशेष संजातीय समूहों को लांछित करना
- जीविकोपार्जन में बाधाएं, पारिवारिक संबंधों एवं सहयोग में बाधाएं, बीमारी का भय[7]

---

[4] https://www.mohfw.gov.in/pdf/GuidelinesonpreventivemeasurestocontainspreadofCOVID19inworkplacesettings.pdf

[5] https://www.mohfw.gov.in/

[6] https://www.icmr.gov.in/

[7] Technical Note: Protection of Children during the Coronavirus Pandemic (v.1), The Alliance for Child Protection in Humanitarian Action, Page 2